

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुके.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३८ (५४०)

ग्रंथ नाम

विषय कथा पुराण



श्रीगलेश्वरनमः
रात्रपवंशारः
मजयजयराम

पंचानामदि
श्रीरामजया
धृष्णुपंसवतु

Ramadeo Ghoshan Mandai, Dhule and the
"Jait Pople of
"Jait Pople of
Covers Ramashetha, Mundal."

११

१ श्रीरोदायनमः॥ श्रीसरस्त्वयेनमः॥ श्रीगुरुप्रयोनमः॥ जोटेवके
 लिङ्गे श्रेष्ठिं॥ बैसोनिमायादेवचापाटि॥ बैज्ञाविष्णुमहेशपो
 टिं॥ जन्मविलिकावक्त्रं॥ १॥ कोतुक्रेतेउन्नियानावे॥ रंजविसक्रा
 रतेच्याभावे॥ अव्यरुपालकिंचनावे॥ आपदुनिपदुउवी॥ २॥
 तयाआदिपुरुशास्त्रामि॥ लिला॥ श्वभरुनुनामि॥ नमस्का
 रुनिमनोधर्मि॥ सावधलए॥ नमाः॥ ३॥ आतांचोयेविराट
 पर्व॥ नरससुधेचासुचारुवा॥ श्रवणायिंद्रियाचेवैभव
 आतिअभिनवनवदवे॥ ४॥ मंभठेक्रोनकेगगनि॥ गवन
 काठवेसमुड्जिवनि॥ विश्वभराचेयथसदानि॥ दुराणश्चा
 नरिधेना॥ ५॥ मुटेअल्पकेबोलतिवचने॥ तेंमध्येऽथवा

© Rajendra Sanskrit Mandal, Dhule and the
 Regional Museum, Dhule
 "Digitized by srujanika@gmail.com"

नेणतपणे॥ तुग्गाहिकडीवेंप्राले॥ जेसकरितेगंभार्दि॥ ६॥ प्र
यागीजान्हवीच्चानिरा॥ क्राच्चुकुपिकाभन्ननिच्चतुराकाधउनि
तिरामेश्वरा॥ असित्रोकार्थआवति॥ ७॥ त्रिविवेहाव्यिमंयनि
देखा॥ व्यासेकाटिलेअम्बतेइका॥ महाराष्ट्राव्याकृपेका॥
भरउनजेकामजहातीं॥ ८॥ त्रसा हपाठविलाप्रिति॥ त्रोस्यि
काननसंतश्चोति॥ कर्णद्वारा भलि॥ हृदयलिंगसिंचणे॥ ९॥
द्वादृशावत्रेआरएवास॥ सर्व नंतरेकरुनरेश॥ दीर्घहृषि
गुणविशेष॥ विचारकरितोओका॥ १०॥ चौधेबंधुआणिझो
पदि॥ धोम्यविवेकाचाउदाधि॥ यातेल्लोविक्राव्युद्गुद्गि॥ उ
द्गि प्रहसजहोयिं॥ ११॥ नष्टचर्यअसातवासा॥ कवरोगयिकृ
मावाकेसा॥ त्रात्रुसिक्कल्पाविशेषा॥ महादेसनिपाउती॥ १२॥

२४

(3)

अकुमावजरिहोयगवे। तरिपुडातिकाराक्रमनितेरावें। ऐसेक
 दितास्यभावें। आयुष्यगेलेजागपां॥१३॥ द्योम्यजलेविचार
 सुमति। कासयाक्रमसिचितावति॥ होणारतेतोप्रारब्धगति॥
 अपेआपहोतसे॥१४॥ यस्ताचेवरविज्ञासि॥ नुपेपालटटति
 आपेसि॥ नामेपालटाविवेति॥ नेतुअेकनरेंद्रा॥१५॥ कं
 कनामरेविजेधमा॥ वल्लवधानबक्षियाभीमा॥ घेउ
 निअंगनेचिप्रतिमा॥ बुहनचार्जनुना॥१६॥ प्रथिकनामन
 कुछाते॥ तंतिपाळसहदेवाता॥ स्तेरांडिडोपदिते॥ क्षत्रिमना
 मेपाचारा॥१७॥ धर्मरायाचेघरि॥ होतोंतेयेंअधिकारी॥
 ऐसेकोलुनिविराटनगरि॥ विराटसंगिवसावे॥१८॥ लोटल्या
 अहातसंबहसर॥ पुढेंकर्त्तआनविचार॥ राज्यत्रासिचाव

॥२॥

॥२॥

The Rajawade Sivshilpi and Mangarajlal and the Yashoda
 Chavhan Project
 www.rajawade.com

सर॥ साध्य असा ध्यजाणा वया॥ ११॥ ऐसे धोम्य अनुवाहतां प
 रम संतोश कुंति सुता॥ ब्राह्मण संगीया समस्तां॥ असा देउनिपा
 ठविलें॥ १२॥ कोहि पा चोबहै जापती॥ कोहि सप्तमपुरी प्रती॥
 क्षम्भव सुदेव संगति॥ वक्षयिव - पावे॥ २१॥ कोहि घाडिलेहस्त
 ना पुरा॥ खेद अलहाद को रवा॥ असातवास युधिष्ठिर॥
 कोठ कै सेजाणा वे॥ २२॥ यित्त रथे सहित॥ सेवक सोयरे
 परम आस॥ द्वारके गेल्या छटुना॥ य॥ स्नेहमा विंपा बिसां॥ २३॥
 झोप दिच्यो परिचारिका॥ सरविया वेत्रीया अनेका॥ धृष्ट धुन
 हे उनि सुखा॥ पाविता जाणा सुरकाडें॥ २४॥ अग्नहोत्र समाप्ति
 सि॥ धोम्य जाता पांचाङा सि॥ निति सांगैर्पाउवासि॥ विराट संगि

"Rajavade a shival Mandal, Dhule and the
 wife of a wanton
 who was a member"

॥३॥

वसावया ॥२५॥ नामरूपयोरपला को एहाकब्बो नें हवेशान ॥ हीना
 दुनिपरमदीन ॥ अे सैलो काहाखवावो ॥२६॥ हाखउनि चाहुर्य
 कुशाकते ॥ मुख्यतु नाइजो प्रभुते ॥ सामर्थ्यबो लिले जें नघउते ॥
 तेविशादि प्रति द्या ॥२७॥ असपन बोलिजो सर्वथा धर्मजो निर्म
 छनिलो भता ॥ पिदियने मिरि यव ततां ॥ वल्लभ होयरायाते ॥२८॥
 राजस्त्रिये सिसंवादा ॥२९॥ राजपुत्र नाम वीनोह ॥ राजपुत्रो हिते सिंवाद ॥२९॥
 जाएते पुरुषिं नकरावा ॥३०॥ अचाटकार्यसांगे ॥ नकरवेल
 लेनिन किजे मागें ॥ स्वभाव बोछ रखोनि वागे ॥ तोचिरायाते वल्लभ ॥
 ३०॥ मागे सेरे अंतः पुरि ॥ पुटागकेरण चतारि ॥ दिधलि अजाव
 दि सिरि ॥ तोचिवल्लभ रायाते ॥३१॥ किजे सर्वाचे अजाव ॥ कोठेनदा
 रवविविषभावा ॥ सर्वायासु निगोरव ॥ तोचिपावे निर्धारि ॥३२॥

(4)

(48)

केरणीकरो निलपावि। महिमादुजया चिवादवि॥ माहायेशा चेप
दवि॥ आपेआपपावत॥ ३३॥ यसनेमित्याच्यापारि॥ सावधान
आहोरात्रि॥ आबसनिदादवुडुरी॥ तोचिरायातेआवडे॥

३४॥ जालियांसानअपमान॥ दर्शवेत्रादेनघालिमन॥ समावी
छसुत्रसन॥ तोचिपावेपदवते॥ ३५॥ राजपेशुन्यभायकेकानी॥
राजेनिशनबोलेवहनि॥ राजसा पातेसमानि॥ तोचिमानेन्द्रा
तें॥ ३६॥ प्रभुनेबोलिल्यांबो॥ प्रभुपुस्तेतेंचिसांगरो॥ नपा
चादितानाहिजाए॥ तरिंपाविजेप्राति छा॥ ३७॥ धुसित्याविगानक
रिकाजा॥ संकटकाळिनमनिलाज॥ राजगोरवेनचढेमाज॥ तोचि
फवेमहितेते॥ ३८॥ राज्यासनिराजवहनि॥ राजयाचेपेकातस्थानि॥
बैसकानकरितोवाङुगि॥ मानपावेन्टपाचा॥ ३९॥ आपुलेंप्रादुने

(5)

॥४॥

लेज्जान् ॥ नेष्यातेन लेअज्ञान् ॥ ज्याचेमुखि मधुरवचना ॥
 तोचिमाने विश्वाते ॥ ४० ॥ असोहुलाजाएयाप्रती ॥ कायबोलरो
 बुद्धलालयक्ति ॥ औसेतां गितल्लारिति ॥ असातवासकमाका
 ४१ ॥ हृदयिधरो निघट्टप्रति ॥ सरणि असावे आहोसात्रि ॥ च
 योदशवर्गाचियेअंति ॥ सि यतसे ॥ ४२ ॥ और्ष्यसांगे
 निकृतनरेवा ॥ धोम्यगेला ॥ उद्देशा ॥ धर्मलोवि-यास्त्रे ॥ ४३ ॥
 सा ॥ पुढाकरलोबंधुहो ॥ ४३ ॥ असातवासु परग्रहवस्ता ॥ उ
 दरनिविनिकवलेरिति ॥ पांचल रातिथियेअथीसंकटकाहि
 असेनां ॥ ४४ ॥ धर्मलोमि नीवेद्विनवाचा ॥ सभामंडिपांड
 वांचा ॥ जातिबालामसद्विदेचा ॥ संग्रहअसेमजपासि ॥ ४५ ॥

४८) रणपरिक्षाकुशवा॥ खेक्षेजाएधृतरवेक्ष॥ बुद्धिक्षिद्युक्तिसब
वा॥ मजसमानअसेना॥ भूग्रवस्तुपरिक्षावाजनिती॥ समयिजालेवि
चारयुक्ति॥ सहजघउलियासंगति॥ जालवेलस्वभावें॥ ४७॥ बो
धुनियान्तपाचेमना॥ बुद्धिक्षमकाशकरिगा॥ भीमजालेसुप्रसन्न
मिहिकरिनमधाते॥ ४८॥ पाहककलिल्लवनामा॥ धूमधिरिसुप्रक
र्मा॥ भक्षतोऽप्यअमृतोपमा जविनस्युत्तर्त्ते॥ ४९॥ अरीमास
मीनिदीवा॥ वारीरेकेलावाद् ॥ ५०॥ तोदिदावोनिउल्कास॥ उपें
जविनरायाते॥ ५०॥ औसंबालतोचमकार॥ अंगिकारैलमाले
श्वर॥ अर्जुनस्त्राहाविचार॥ आमुच्याहिपरियेसा॥ ५१॥ वर्णयि
कउवैकीशापु॥ तोद्वापकराव्यानिल्पु॥ आंगिअवगोनिअंगना
वपु॥ नाजयातेभटगो॥ ५२॥ नाटकजाकेच्छाकुमरी॥ नाचउंजाए

१६

कवाकुसरी॥ सारथ्यविधाया हिवरी॥ अर्जुन संगेता धलि॥ ५३॥
 थकरितां शर संधान॥ ने मेनि श्वयेल तप्ते हना॥ हृषिपाहातां जालें जा-
 न॥ सास इत प्रसादे॥ ५४॥ औ सिवदोनि पांगो एि॥ कावृ कमुतया निक-
 टि॥ न कुछ लोमा सियेगावि॥ ओ कदोत्तर्धन विधा॥ ५५॥ अश्वना-
 च वरो निगुति॥ केर फिर वरो पक्षा ती॥ सीध्र पक्ष तावत गती॥ मंड-
 वा छति दाखवलो॥ ५६॥ करन् चाल भलो गगनी॥ तरो निजाति समु-
 द डिवनी॥ औ सें चोज दादववा॥ न यनी॥ असुत करि नरायान्ये॥ ५७॥
 सह देवस्त्रोलै स्त्रिघे नु॥ त्रव त्रामद मनि आति सुजाए॥ होहनि पर्य-
 नि सर्वनि पुण॥ श्री श्वहोय मिल ह्या चा॥ ५८॥ क्षम्भा लामि सेरडि॥
 पां चावि चिसु श्वकाकरी॥ विराटं भायी गुल सुंदरी॥ आना धन सु-
 धे ह्या॥ ५९॥ औ सियार चुनि उपाया॥ दिवस कु धमराया॥ मणस्मेरो

॥ ५॥

६८

निहंत्पायां॥ साहि जरोचालिलिं॥ ६०॥ पुटें चालतां जगजेरि॥ विरा
 टनगराचिये पारि॥ समजानभुमि केचानेक ठिं॥ विशाव ब्रक्षं गमि
 चा॥ ६१॥ अजुनि भरोचास्त्रे अस्त्रे॥ येथे रेवाविकिं सुपवित्रे॥ अस्त्रि
 मं वितामहामत्रे॥ हृषिकोए दपउती॥ ६२॥ खुअतरमंत्र ब्रिजाचे
 रूपा। महाचास्त्रे दि सति सर्प॥ भये गवानि याकंप॥ स्यवीकोहि
 नक्षकती॥ ६३॥ खड्डवल्लिदु गापें॥ अच्युपावका चिरुपे॥
 पाहातां सुर्याचिवोपे॥ झाका सुषभा॥ ६४॥ मुगचमिवैष्ण
 निनिगति॥ नकुछेविलिव्रक्षावरता॥ जेकां आणि काच्येहा
 ति॥ साध्यनक्षत्रिसर्वथा॥ ६५॥ वद्धस्त्रियेचेकछेवरा तेथेबा
 धलेभयंकर॥ दुर्गंधि सवनारिनरा समिपकोहिनयेती॥ ६६॥
 नगरमध्यवेस्तिनरक्षादुव्वा॥ दुर्गाप्रसादहृतिलाऊच्छा॥ अंबा

४
संगव तिविदाक्षणा॥ लोटां गलि कंदि लि॥ ६७॥ धर्मराज करि स्वन
विश्वमाते तु नें न मन॥ तु जवे गवे कं ब्रह्म आन॥ हें सर्वथा घडे ना॥ ६८॥
ब्रह्माचां कर आलि हरी॥ बाक कें ज मालि दु साउदरी॥ वर्तति आपु
लालाव्यापारी॥ हु स्थिये ओझे जननिये॥ ६९॥ हु स्थिआशाभं गिता है
रव॥ ब्रह्माजाला च दुर्मुखबा॥ लिंगपतन चं बक॥ कपाक पारि बा
केला॥ ७०॥ विष्णुस्ति है बोनि वृहु दरी॥ कहु तपें हास्व विआगे॥ लाग
ताब्रं है चियमागे॥ स्मरणा बका, बोके केला॥ ७१॥ इकाओं गियउलि
भगे॥ शशाङ्कव्यापि लामहारोगे॥ तादुसे निअसाभंगे॥ अविधि सा
र्गवर्तीतां॥ ७२॥ करनं नयेतौ चिकरहो॥ श्रे एव जितां राहोटहो॥ ते
दुस्ति अवशाजाएगा॥ वेदवचनयथार्थ॥ ७३॥ तो आमनें घडला
होवा॥ जलो नि भोगुं आरएवास॥ आतां उगउन दुपा है वरा॥

४८
निशि नासि अवद्वया ॥७४॥ जेजें व्यक्ताव्यक्त दिसे ॥ तें तें तु ज्ञें स्वरूप
असे ॥ दुसे निचयेक अंत्रो ॥ विश्वसद्वचाविजा ॥७५॥ तारातुं चित्तु
तआगमि ॥ गोरि भगवति वेवधामि ॥ वज्रदेवियानामि कोवि
का ॥ चारिकोलिजे ॥७६॥ जेनलतापि पक्षावति ॥ त्रिपदागायि त्रिवे
दमं त्रि ॥ सांख्यमते सुष्रद्धाति ॥ आदिशक्तिव्यापके ॥७७॥ तेऽवता
रधरो निगोकुलिं ॥ जन्मस्तिरुदारुलिं ॥ कंसक्रुच्याकरो निहोलि ॥
चेधमागध आटिला ॥७८॥ चेधमुद्विच्छुति ॥ प्रसहजा
लिआदिशालिं ॥ मोक्षस्यकीर्ति पाहति ॥ अश्यासिवि सुवाच्चा ॥७९॥
वर्णयेकवसिजेयेये ॥ वैरिपावतिपराभवाते ॥ पुढें सोगलमेदिनिते ॥
सागरांतयेक अस्ता ॥८०॥ अभ्यदेउनि हाति ॥ लोचनागोचरभग
वति ॥ पुढें राजस्प्रभेन्ती ॥ धर्मराजपातला ॥८१॥ वहोनियाअसिर्व

(8)

चन॥ तुलेशया स्वरूपत्वाणा॥ न्युपत्तिरोक्ते रिलकोणा॥ किमर्थ्येते
 यागया॥ ८२॥ दि ससि सुर्यहि निसो ज्वला॥ आंगि औश्यर्यचेबका
 प्रिध्विचेजे भुपब्बा॥ श्रेष्ठ आगे माससी॥ ८३॥ धर्मआनुवादे हांसो
 नगचंडगोजिमिक्राल्लए॥ तिर्थेन्नमताभाषागमना॥ होय अस्त्रितध
 मच्या॥ ८४॥ सभापेतितधर्मनिक्रियाए॥ पांउवजालिराड्यसि
 ए॥ तुं धार्मिकपरमश्वेष्टु॥ उत्तरान्नालोकुतुजपासी॥ ८५॥ चाहिवे,
 दि साहित्त्वास्त्रिं॥ परिचिन्त्य नंत्रिं॥ उपासनायंत्रतंत्रिं॥ कुं
 द्विकुंठितअसेना॥ ८६॥ खेकाजाते धुतखेका॥ अस्त्रयभारणि
 नगमेवेका॥ वस्तुपरिक्षेमिक्राल्लवा॥ क्रेकनामपैंमास्ते॥ ८७॥ जा
 ते वस्तुचिपरिद्वा॥ वकुकायबोलों विरह हासा॥ राजाल्लामज ऊपे
 क्षा॥ संगतिचिकुहुअसे॥ ८८॥ अशनवसनमानथेन॥ पिछेसा

(6)

© Reunited Sanskrit Manuscript and the Yashoda Project

(४८)

७

दिखें निवेदिन ॥ आतां स्यस्तकरोनिमन ॥ मजसंगतिअसावे ॥ ८० ॥
अनुवादोनस्तेहगोषि वेसविलाआसनानिकटि ॥ पुढेदेवतिघे
जटृष्टि ॥ सभास्थानिनरेंडा ॥ १०॥ कनकाचकातुल्यसरबा ॥ हाति
कवचिलेप्रचंडमुद्राळा ॥ दविर्दोविलिक्रिमंडबा ॥ पोछियार्मत्र
शोभले ॥ ११॥ जोहानुनन्तरेतत्तमा ॥ लगेबल्लवमिसुपकर्मा ॥ ध
मधिरित्तमोत्तमा ॥ भक्तमुख्यानेपत्रविं ॥ १२॥ लेधपेष्ठस्वा
धचोष्ये ॥ अनन्त्रमान्लपाय ॥ गकाकयिकेच्यासुवासे ॥ वेध
लाविवसंता ॥ १३॥ भीमसेनाच्यासंगती ॥ बाक्काभ्यासआहोरात्रि ॥
करितांमल्लाचियेपेत्ति ॥ मानहिजेबविष्टे ॥ १४॥ आतांदेउनियां
पोटा ॥ घेयिंपाकक्रियेच्याकष्टा ॥ आणिरवहिनरेंडश्रेष्ठांकराणि
दाविनपुढारि ॥ १५॥ अवघ्यसुलगेनिराजोष्यरा ॥ पाकक्रियेच्याअ

(१)

॥८॥

धिकार। देवोनिबल्लववरकोहरपाकशाकेस्थापिला। ९६। चिरकं
 चुक्तिकरकंकणे। श्रवणिताटेकभुवाणे। चाकवेदैदिव्यांजनेनेत्र
 क्षमकेत्रोभति। ९७। अवगोनियाअंगनारूप। सक्षेपातलाअर्जु
 नरूप। राजाक्षेत्रावल्पदीया क्रोतुनिउजकला। ९८। नि
 रावेपुरुषक्रियानारी। प्रभानसमायप्रिष्ठीबरी। स्त्रित्वलोपोनि
 काहरी। पुरुषतेजविराजो। ९९। न। मिथमाचियेघरी। नाटकशा
 केनाचविनारि। गायनसिवगोदारी। गीतन्द्रुयप्रवेदे। १००।
 अर्जुनासंगेवेसतोरथिं। वाक्यागविआपुलाहाति। द्युद्धिनाना
 गतिविगति। क्षारथ्यविधालाधलि। १। रवांडवदाहिअर्जुनयुद्धे।
 दृष्टिहेस्त्रिलिम्याविवधे। पार्थगुरुच्याप्रसादें। संयामक्षाङ्गोड
 ठी। २। संगीवसतासमयितमयिं। क्रक्षोयेयिलबोलएकायि। रा

The Ratnadev, Shrodhara, Warangal, Dhule and the Kashivad
 Poems of the Ratnadev, Shrodhara, Warangal, Dhule and the Kashivad
 Poems of the Ratnadev, Shrodhara, Warangal, Dhule and the Kashivad

१४
जासंतुष्टोनहृदयिं। सर्वस्वदानबोलिला॥३॥ संतोशोनिअमृतो
तरी॥ नाटकशाकेचियानारी॥ स्थाधिनकरोनितेअवसरी॥ बहुन
टठेविला॥४॥ प्रचंउचाकधरोनिहातिंनकुकबोलेरायाप्रती॥
अश्वासिझाकर्तासुमति॥ नाउतविधेकुकगुरु॥५॥ कडेविकडि
नाचवणे॥ भाला-बोफेरवेरवणे॥ वकणेउडवणेटिकवणे॥ आ
वरणेमुखसंसा॥६॥ वात्तचाजवणेनिराकि॥ वैसोनिताएसिधु
जेकिं॥ सहस्ररथियांन्यमंतरविकृति॥७॥ अघ
उक्कियामिराजगुरु॥ जाणोनपाक्कियुधेखिरा॥ तोगेलियातव
अध्यारा॥ धरोनिआलोंतुजपासिं॥८॥ हृदयिकवक्कोनियानर
पाकें॥ स्वामित्रदिधलेंअश्वशाक्को॥ सहदेवल्लएमाझेक्को॥ ना
वेकहृष्टिविलोकि॥९॥ धर्मधरिचामिरिलारी॥ अपरद्वन्द्व

(१०)

॥९॥

भसहस्रवरी। येकलाञ्छंगवरेष्वावरी। सीक्षाकरिमात्रलि
 या॥१०॥ धेनुलैसिकुष्ठनिवाडे॥ दुर्घश्वरतिसरितापाडे॥ नफ
 कतियाहिफक्षति कोडे॥ हङ्गलस्थर्षभास्मिया॥११॥ वंध्याप्रसव
 तिवांसुरे॥ इचमकारपाकिज्ञातुरे॥ राजाललेलक्षारिक्षारे
 तुक्षाहातिवोपिलि॥१२॥ यवरीतोपदिसुंदरी॥ येतांदेखि नलि
 नगरनारी॥ नगतिमुत्तिम गरी॥ नवनागरैसुरक्ष्या॥१३॥
 सुधेष्टतें सांगतिवच्चनि॥ वित्रलावापाच्चिरवाणि॥ स्वकुमा
 रजातिचिपद्गिनि॥ कृपनयानेनसमाय॥१४॥ ओसिपातलि
 सेनारि॥ कोलातेनेलवेनि धर्मिरि॥ पाचाननिऊपुलाधरि॥ प
 वित्रसंगीरेविजे॥१५॥ धातुनियांपरिच्छारिके॥ झोपादिआणि
 लिजवविक्रो॥ अवलोकितांपरमसुखेहहयिजालिसंतुष्टा॥१६॥

१०८

पुस्तां लोमि सेरं दि ॥ यास से ने चिसे काकरी ॥ ते गेलि यांतु जाघ
 री ॥ कावृ के बुपात ले ॥ १७ ॥ सु धे छाल ले गुले करा त्री ॥ मासि स्था
 मि लि ओ सिदि ससी ॥ मायबहि णि हन विजो षिं ॥ मज संग तिवतीव ॥
 १८ ॥ कार्य सांगतां वाटे लाज ॥ गटसा मि चक्र वर्ति चिभाज ॥ मालि क
 कविके जव लिगुंज ॥ ते विगि दि सु दुज पुढे ॥ १९ ॥ डोपदि ले न
 वदें औ से ॥ वुसि ये संगति व ॥ नसा सत्य मानुन सुमाने से ॥
 से वाधे यिं मज हाति ॥ २० ॥ उ ॥ भन्ना चं जौ जन ॥ पराचे चरण
 क्षावन ॥ होनि कामे करन भी न्ना ॥ हास्य करीन मि हुसे ॥ २१ ॥ सु
 धे श्यालि सुमध्य मे ॥ होनि अयोग्य तु जउ त मे ॥ माने माझो नि
 समागमे ॥ मज समान सुख भोगी ॥ २२ ॥ राणि ले वो सुंदरी ॥ अ
 शन वसन मा झिये सरी ॥ से उन्हि अ से मासे धरी ॥ संजायन धरी



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com